गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; फरवरी, २०२०

बा-बापू१५०
१८६९-२०१९

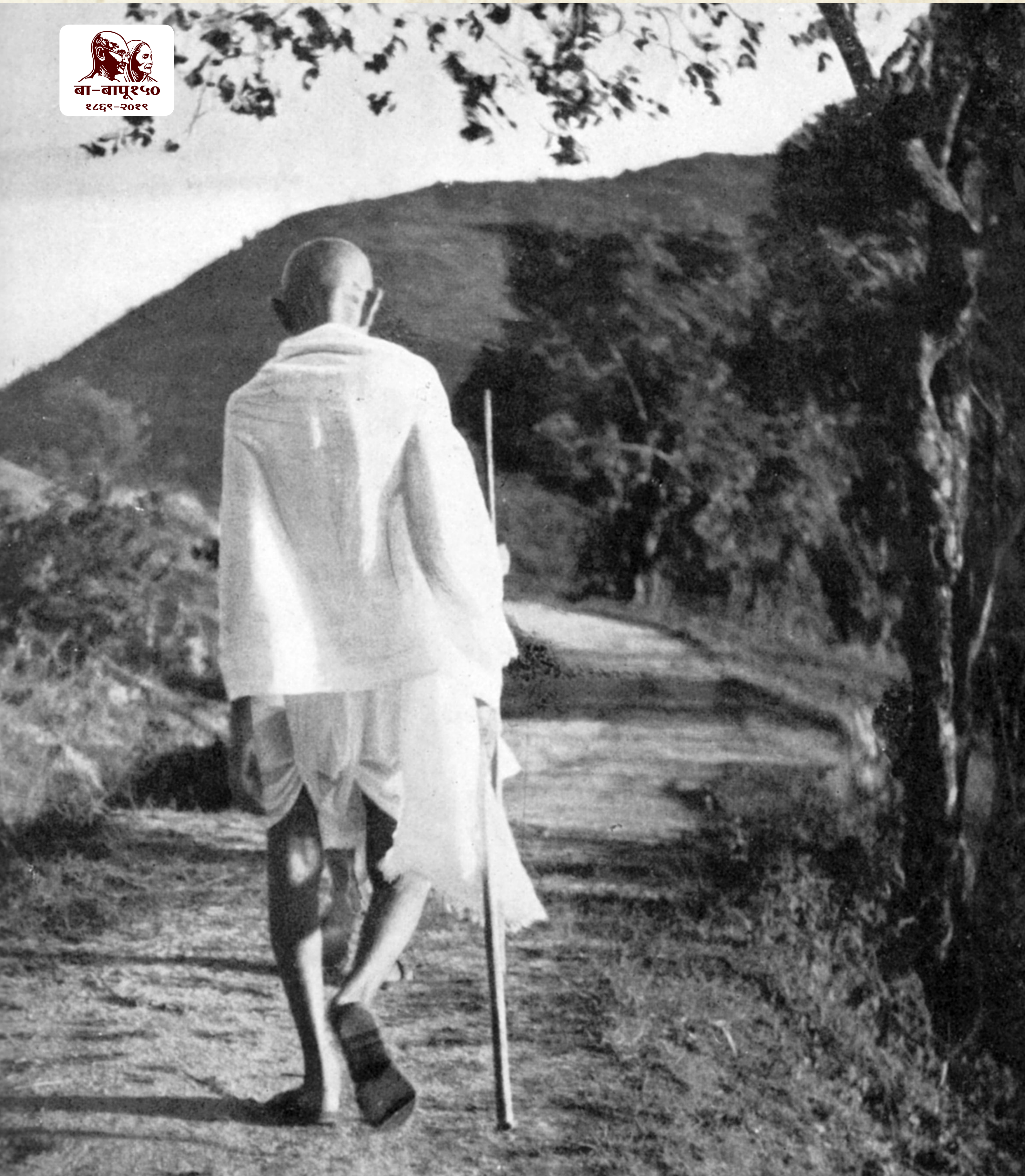

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–२, अंक १ □ फरवरी, २०२०

सत्य न होता तो यह जगत भी न होता।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– .... पृष्ठ

संपादकीय ....

आत्मकथा, प्रकरण–११, ईसाइयों से संपर्क १

Contributions by Research Fellows
Learning for Liberation: Gandhi on Women's Education ३

गाँधी की महत्ता का स्वरूप.. ५

गाँधी तीर्थ से – (न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी) ६

फाउण्डेशन की गतिविधियां...८–१३

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मोबाईलः 9404955272;
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net;
ई–मेल : info@gandhifoundation.net; CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*
(**पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।*)

मुखपृष्ठ छायाचित्र: महात्मा गाँधी, १९३७।

संपादकीय...

वर्तमान की जरूरत – गाँधी

''आने वाले एक हजार साल गाँधी युग से जाने जाएंगे।'' काका साहेब कालेलकर का यह विधान निःसंदेह सार्थक है। जिस तरह से पिछले एक शतक से वैश्विक स्तर पर गाँधी विचार आधारित अहिंसक चहल पहल हुई है उसने वैश्विक इतिहास को बदलकर रख दिया है। करीब नब्बे से भी अधिक राष्ट्र, छोटे और बड़े समूहों ने गाँधीजी के विचार द्वारा अपनी मानव अधिकार व स्वतंत्रता की लड़त में अहिंसक माध्यम से फतह हासिल की है। यह चहल–पहल दिखा रही है कि गाँधी ने युवाओं में अहिंसा की निश्चित विजय के लिए एक नवीन क्षेत्र को खोल दिया है।

यह सब देखते हैं तब गाँधी को समुदाय तक कैसे ले जाए यह प्रश्न अब पुराना हो गया है। अब तो समुदाय की हर एक व्यक्ति, समूह और इकाई यह चाहती है कि हम गाँधी तक कैसे पहुँचे। मार्टिन ल्यूथर किंग जू. के शब्द की गुंज आज विश्व ठीक तरह से सुन रहा है। वे कहते हैं, "We may ignore Gandhi at our own risk"

आपको हर एक प्रदेश और हर एक पीढ़ी (Generation) में बहुत सारा परिवर्तन देखने को मिलेगा, लेकिन उन सब में एक साम्यता यह है कि हर एक पीढ़ी के पास गाँधी को स्वीकृत करने का अपना नजरिया है। हर एक उम्र की व्यक्ति चाहे वे बुजुर्ग हो या बालक सभी को गाँधी के पास से कुछ न कुछ मिल रहा है। यह साम्यता पिछली पीढ़ी में या वर्तमान पीढ़ी में तो है ही, बल्कि आने वाली कई सदियों तक हर एक पीढ़ी को गाँधी अपने नैतिक विचारों के आधार पर कहीं न कहीं स्पर्श करते रहेंगे।

गाँधी का विरोध करने वाले भी गाँधी के दिवाने बन रहे हैं, वैसे भी गाँधी का ह्रदय विशाल है उनके दिल में किसी के प्रति द्वेष भावना न थी, न है और न रहेगी। वे सब को स्वीकृत करते हैं, अब सवाल हमारा है कि हम अपने अस्तित्व को टिकाने के लिए उन्हें स्वीकृत करें। अन्यथा डॉ. किंग जू. ने कहा उसी तरह उन्हें नकारते हुए जो भी जोखिम आए उसके लिए तैयार रहें...

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन में महात्मा गाँधी व स्वातंत्र्य संग्राम से जुड़े अमूल्य दस्तावेज जैसे पत्रों, डायरियां, किताबें, तस्वीरें, फिल्म, मानपत्रों, ड़ाक टिकट आदि विभिन्न साहित्य का संग्रह व संरक्षण अत्याधुनिक अभिलेखागार एवं ग्रंथालय के माध्यम से किया जा रहा है। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संशोधक इस साहित्य का लाभ उठा रहे हैं। बा–बापू १५० के अवसर पर फाउण्डेशन के इसी साहित्य भंडार में से चुनिंदा साहित्य का प्रयोग कर विशेष प्रदर्शनियां निर्माण की जा रही हैं। ऐसी ही एक प्रदर्शनी 'महात्मा को नमन' जो गाँधीजी के अंतिम समय की रोचक जानकारी प्रस्तुत करती हैं, हमारे पाठकों के लिए चित्र–श्रृंखला के रूप में अंतिम पृष्ठ पर क्रमशः प्रस्तुत कर रहे हैं। इस अंक में सत्य के प्रयोग से अगला प्रकरण, फाउण्डेशन के रिसर्च फेलो नबीला काज्मी का शोध लेख, न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी का गाँधी तीर्थ के प्रति विचार तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

सत्य के प्रयोग

– मोहनदास करमचंद गाँधी

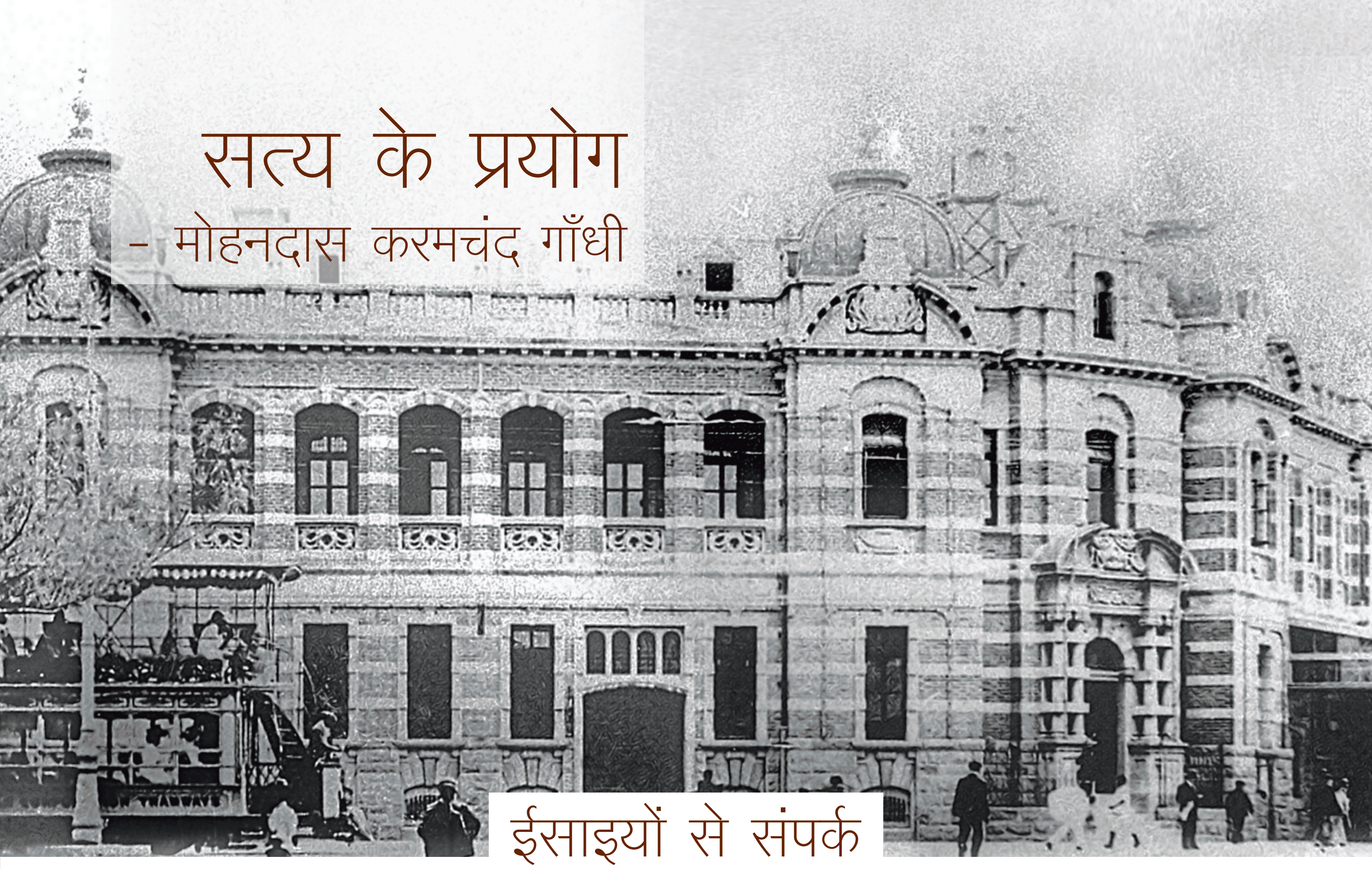

ईसाइयों से संपर्क

__'खोज गाँधीजी की'__ के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। गाँधीजी जब ईसाइयों के संपर्क में आए उस गाथा को दर्शाता हुआ आत्मकथा के भाग २ से प्रकरण ११ प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

दूसरे दिन एक बजे मैं मि. बेकर के प्रार्थना–समाज में गया। वहाँ मिस हेरिस, मिस गेब, मि. कोट्स आदि से परिचय हुआ। सबने घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना की। मैंने भी उनका अनुकरण किया। प्रार्थना में जिसकी जो इच्छा होती, सो ईश्वर से माँगता। दिन शांति से बीते, ईश्वर हमारे हृदय के द्वार खोले, इत्यादि बातें तो होती ही थीं। मेरे लिए भी प्रार्थना की गई: ''हे प्रभु, हमारे बीच जो नये भाई आये हैं उन्हें तू मार्ग दिखा। जो शांति तूने हमें दी है, वह उन्हें भी दे। जिस ईसा ने हमें मुक्त किया है, वह उन्हें भी मुक्त करे। यह सब हम ईसा के नाम पर माँगते हैं।'' इस प्रार्थना में भजन–कीर्तन नहीं था। वे लोग ईश्वर से कोई भी एक चीज माँगते और विखर जाते। यह समय सबके दोपहर के भोजन का होता था, इसलिए प्रार्थना करके सब अपने–अपने भोजन के लिए चले जाते थे। प्रार्थना में पाँच मिनट से अधिक नहीं लगते थे।

मिस हेरिस और मिस गेब दोनों प्रौढ़ अवस्था की कुमारिकायें थीं। मि. कोट्स क्वेकर थे। ये दोनों कुमारिकाये साथ रहती थीं। उन्होंने मुझे हर रविवार को चार बजे की चाय के लिए अपने घर आने का निमंत्रण दिया। मि. कोट्स जब मिलते तो मुझे हर रविवार को उन्हें हफ्तेभर की अपनी धार्मिक डायरी सुनाती पड़ती। कौन–कौन सी पुस्तकें मैंने पढ़ीं, मेरे मन पर उनका क्या प्रभाव पड़ा, इसकी चर्चा होती। वे दोनों बहनें अपने मीठे अनुभव सुनातीं और अपने को प्राप्त हुई परम शांति की बातें करतीं।

मि. कोट्स एक साफ दिलवाले चुस्त नवजवान क्वेकर थे। उनके साथ मेरा गाढ़ संबंध हो गया था। हम बहुत बार एकसाथ घूमने भी जाया करते थे। वे मुझे दूसरे ईसाइयों के घर भी ले जाते थे।

मि. कोट्स ने मुझे पुस्तकों से लाद दिया। जैसे–जैसे वे मुझे पहचानते जाते, वैसे–वैसे उन्हें अच्छी लगनेवाली पुस्तकें वे मुझे पढ़ने को देते रहते। मैंने भी केवल श्रद्धावश ही उन पुस्तकों को पढ़ना स्वीकार किया। इन पुस्तकों की हम आपस में चर्चा भी किया करते थे।

सन् १८९३ के वर्ष में मैंने ऐसी पुस्तकें बहुत पढीं। उन सबके नाम तो मुझे याद नहीं हैं, लेकिन उनमें सिटी टेम्पलवाले डॉ. पारकर की टीका, पियर्सन की 'मेनी इनफॉलिबल प्रुफ्स', बटलर की 'एनॉलोजी' इत्यादि पुस्तकें थीं। इनमें का कुछ भाग तो समझ में न आता, कुछ रुचता और कुछ न रुचता। मैं मि. कोट्स को ये सारी बातें सुनाता रहता। 'मेनी इनफॉलिबल प्रुफ्स' का अर्थ है, कई अचूक प्रमाण–अर्थात् लेखक की राय में बाइबल में जिस धर्म का वर्णन है, उसके समर्थन के प्रमाण। मुझ पर इस पुस्तक का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। पारकर की टीका नीतिवर्धक मानी जा सकती है, पर ईसाई धर्म की प्रचलित मान्यताओं के विषय में शंका रखनेवाले को उससे कोई मदद नहीं मिल सकती थी। बटलर की 'एनॉलोजी' बहुत गंभीर और कठिन पुस्तक प्रतीत हुई। उसे अच्छी तरह समझने के लिए पाँच–सात बार पढ़ना चाहिए। वह नास्तिक को आस्तिक बनाने की पुस्तक जान पड़ी। उसमें ईश्वर के आस्तित्व के बारे में दी गयी दलीलें मेंरे किसी काम की न थीं, क्योंकि वह समय मेरी नास्तिकता का नहीं था। पर ईसा के अद्वितीय अवतार के बारे

में और उनके मनुष्य तथा ईश्वर के बीच सन्धि करनेवाला होने के बारेमें जो दलीलें दी गयी थीं, उनकी मुझ पर कोई छाप नही पड़ी।

पर मि. कोट्स हारनेवाले आदमी नहीं थे। उनके प्रेम का पार न था। उन्होंने मेरे गले में बैष्णवी कण्ठी देखी। उन्हें यह वहम जान पड़ा और वे दु:खी हुए। बोले, ''यह वहम तुम जैसों को शोभा नहीं देता। लाओ, इसे तोड़ दूँ।''

''यह कण्ठी नहीं टूट सकती; माताजी की प्रसादी है।''

''पर क्या तुम इसमें विश्वास करते हो?''

''मैं इसका गूढ़ार्थ नहीं जानता। इसे न पहनने से मेरा अकल्याण होगा, ऐसा मुझे प्रतीत नहीं होता। पर माताजी ने जो माला मुझे प्रेमपूर्वक पहनायी है, जिसे पहनाने में उन्होंने मेरा कल्याण माना है, उसका त्याग मैं बिना कारण नहीं करूँगा। समय पाकर यह जीर्ण हो जाएगी और टूट जाएगी, तो दूसरी प्राप्त करके पहनने का लोभ मुझे नहीं रहेगा। पर यह कण्ठी टूट नहीं सकती।''

मि. कोट्स मेरी इस दलील की कद्र कर नहीं कर सके, क्योकिं उन्हें तो मेंरे धर्म के प्रति ही अनास्था थी। वे मुझे अज्ञान-कूप में से उबार लेने की आशा रखते थे। वे मुझे यह बताना चाहते थे, कि दूसरे धर्मों में भले ही कुछ सत्य हो, पर पूर्ण सत्यरूप ईसाई धर्म को स्वीकार किये बिना मोक्ष मिल ही नहीं सकता; ईसा की मध्यस्थता के बिना पाप धुल ही नहीं सकते और सारे पुण्यकर्म निरर्थक हो जाते हैं। मि. कोट्स ने जिस प्रकार मुझे पुस्तकों का परिचय कराया, उसी प्रकार जिन्हें वे धर्मप्राण ईसाई मानते थे उनसे भी मेरा परिचय कराया।

इन परिचयों में एक परिचय 'प्लीमथ ब्रदरन' से संबंधित एक कुटुम्ब का था। प्लीमथ ब्रदरन नाम का एक ईसाई सम्प्रदाय है। कोट्स के कराये हुए बहुत से परिचय मुझे अच्छे लगे। वे लोग मुझे ईश्वर से डरनेवाले जान पड़े। पर इस कुटुम्ब में एक भाई ने मुझसे दलील की: ''आप हमारे धर्म की खूबी नहीं समझ सकते। आपकी बातों से हम देखते हैं कि आपको क्षण-क्षण में अपनी भूलों का विचार करना होता है। उन्हें सदा सुधारना होता है। न सुधारने पर आपको पश्चाताप करना पड़ता है, प्रायश्चित्त करना होता है। इस क्रियाकाण्ड से आपको मुक्ति कब मिल सकती है? शांति तो आपको मिल ही नहीं सकती। आप यह तो स्वीकार करते ही हैं कि हम पापी हैं। अब हमारे विश्वास की परिपूर्णता देखिये। हमारा प्रयत्न व्यर्थ है। फिर भी मुक्ति की आवश्यकता तो है ही। पाप का बोझ कैसे उठे? हम उसे ईसा पर डाल दें। वह ईश्वर का एकमात्र निष्पाप पुत्र है। उसका वरदान है कि जो ईश्वर को मानते हैं उनके पाप धो देता है। ईश्वर की यह अगाध उदारता है। ईसा की इस मुक्ति-योजना को हमने स्वीकार किया है, इसलिए हमारे पाप हमसे चिपटते नहीं। पाप तो मनुष्य से होते ही हैं। इस दुनिया में निष्पाप कैसे रहा जा सकता है? इसीसे ईसा ने सारे संसार के पापों का प्रायश्चित्त एक ही बार में कर डाला। जो उनके महा बलिदान का स्वीकार करना चाहते हैं, वे वैसा करके शांति प्राप्त कर सकते हैं। कहाँ आपकी अशांति और कहाँ हमारी शांति?''

यह दलील मेरे गले बिलकुल न उतरी। मैंने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया: ''यदि सर्वमान्य ईसाई धर्म यही है, तो वह मेरे काम का नहीं है। मैं पाप के परिणाम से मुक्ति नहीं चाहता, मैं तो पाप-वृत्ति से, पाप-कर्म से मुक्ति चाहता हूँ। जब तक वह मुक्ति नहीं मिलती, तब तक अपनी यह अशांति मुझे प्रिय रहेगी।''

प्लीमथ ब्रदर ने उत्तर दिया: ''मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपका प्रयत्न व्यर्थ है। मेरी बात पर आप फिर सोचियेगा।''

और, इन भाई ने जैसा कहा वैसा अपने व्यवहार द्वारा करके भी दिखा दिया - जान-बूझकर अनीति कर दिखायी।

पर सब ईसाईयों की ऐसी मान्यता नहीं होती, यह तो मैं इन परिचयों से पहले ही जान चुका था। मि. कोट्स स्वयं ही पाप से डरकर चलनेवाले थे। उनका ह्‌दय निर्मल था। वे ह्‌दय- शुद्धि की शक्यता में विश्वास रखते थे। उक्त बहनें भी वैसी ही थीं। मेंरे हाथ पड़नेवाली पुस्तकों में से कई भक्तिपूर्ण थीं। और उन्हें विश्वास दिलाया कि एक प्लीमथ ब्रदर की अनुचित धारणा के कारण मैं ईसाई धर्म के बारे में गलत राय नहीं बना सकता। मेरी कठिनाईयाँ तो बाइबल के बारे में और उसके रूढ़ अर्थ के बारे में थी।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.११०-११३, क्रमश:

Contributions by GRF Research Fellows

Learning for Liberation: Gandhi on Women's Education

This new column presents selected contributions from the findings of the GRF Residential Research Fellows.

Nabila Kazmi got her masters in Education from Azim Premji University; served as a teacher in Arunachal Pradesh for a while before shifting her base to Pune where she worked among the girl students.
Currently, she is a Residential Research Fellow at the Gandhi Research Foundation, working on gender equity through education reform: a Gandhian perspective under the guidance of Prof. Gita Dharampal.

- Editor

"The ancient aphorism 'That which liberates is knowledge' is as true today as it was before. Knowledge includes every training that is useful for the service of humankind and liberation means freedom from all manners of servitude even in the present life"[1]

Gandhi's idea on education largely differed from the school system at the time of colonial rule. Indeed he condemned the way young people were taught in schools with the aim of becoming merely employable for colonial service. He believed that educational institutes had to be places that propagate ideas of democracy, freedom from one's own material dependency, where children were taught in their own language, i.e. in their mother tongue. He also believed that the 'right education' had to be one that would enable one to become honest and self-reliant, with the intent of serving the needs of mankind. To him, an educational institute should provide an all-round education and accessible to the "humblest and the lowest."[2]

Extending Gandhi's idea of education,[3] the need for it to look beyond the aims of literacy, instilling employability skills or generating 'job-ready' young adults can be considered its main goal. Knowledge through education has to imbibe critical thought, analytical understanding, democratic and independent reasoning, social awareness and new creative discourses. Thus, learning for liberation has to be rooted in the idea that education and knowledge are beyond the confines of a classroom and should impart more than basic literacy skills to the students.

As Gandhi spoke about education for women, he laid special emphasis on women's education directed at teaching them the primary right of resistance,[4] to say 'No', which he thought could only happen through the 'right education', i.e. the one that liberates. This is particularly important for women as they have accepted the position of being subordinate to men in most aspects, and are propagating this mind-set to the next generations. This underscores the premise that education is meant to create free and independent thinkers, a capacity that is yet to be explored more extensively in contemporary times.

In the 21st century there are still girls and women in India struggling with issues of accessibility. Access

to schooling is a constitutional right of every Indian citizen, and yet somehow as if 'second-class' citizens of this country, girls and women are accorded secondary importance, in the name of culture, traditional gender roles and lack of infrastructure. According to the 2011 Census report, the literacy rate of women in India is 64. 6 per cent. This means that one-third of the country's female population is still illiterate, i.e. does not possess the knowledge of reading and writing. For those girls who do have access to schooling the drop-out rate is extremely high. According to the ACER report of 2017, 30 percent of girls drop out by Grade IX and 57 per cent of them leave schools by Grade XI. Poverty is one of the main contributors to the abysmal figures of female literacy (given above). A large number of families cannot afford to send their children to school, despite the Right to Education Act (2009) that provides free and compulsory education to all students till Grade VIII. Some of the glaring reasons for this are that girls have to take care of their younger siblings and perform household chores as their mothers have to work for money and sustenance. These responsibilities along with the possibility of early marriage lead to girls fading away from schools until they completely vanish from the education system to become invisible members of their families, communities and the country.

Gandhi appealed to the women of India not to "disappear from public life, into the household, simply doing domestic work"[5] and to become active members of society by dedicating the education that they received for the use of the poor. This was evident in the involvement of women in the nationalist movement as 'path-breaking', as pointed out by Kishwar (1985)[6] and Patel (1988)[7], that led to the realization by women of their importance to the movement and the regeneration of society at large. However, unless women had acquired the knowledge, as Gandhi pointed out, that brought forth the ability in them to question the status quo, education would not be a tool for liberation but rather for hegemony.

From Gandhi's writings, speeches and life's message, we could draw three salient features of his ideas about education for liberation.

a) Critical discourse in education: "Persistent questioning and healthy inquisitiveness are the first requisite for acquiring learning of any kind".[8] Gandhi spoke about bravery, liberation and active citizenship and their importance in building India during the freedom struggle and in building the nation post-independence. This by extension should be embedded in education by means of critical thinking as integral to learning and teaching.

b) Education for self-sustainability: Gandhi epitomized the idea of self-sufficiency by referring to it as one of the "ideals of man".[9] For women, at the time of pre-independent India, he promoted self-sufficiency through khadi spinning and by naturally interweaving education with handicrafts to attain self-sustainability. Education (nai talim), as envisaged by Gandhi, in contemporary times, needs to create self-sufficient individuals. This holds higher importance for the marginalized as they suffer from repression that is accompanied by economic dependence on the oppressors. Hence, it becomes essential for women to be self-sufficient in order to be liberated individuals.

c) Service-learning in education: Gandhi believed that "an intellect that is developed through the medium of socially useful labour will be an instrument of service and will not be led astray or fall into devious paths".[10] During the Independence struggle, he spread the message of service and learning by calling out to women to work for various causes, and to offer their service to bring about social mobility of oppressed women. This message of service holds high importance for women even today as it was rooted in the 'upliftment' of both those for whom service is rendered as well as of those who provide it.

Unlike his contemporaries, Gandhi's mass outreach and his social mobilization of women on such a large scale make it evident that the study of his approach could hold answers to some of the glaring questions of today's issues concerning women's liberation and the role of women's. Taking a cue from Gandhi, the study of education for women's liberation becomes a larger issue of attaining 'equity for all human beings' and surpasses the narrow lens of examining it from the perspective of just one section or gender in society.

References

1) Harijan, 10-3-1946, p. 38;

2) Harijan, 5-5-1946, p. 124;

3) Nai Talim – literally called 'new education' as promoted by Gandhi was more than that, imparting literacy skills and focusing mostly on building the intellect. Gandhi propagated that education be provided by the use of a craft that was integral to teaching and not merely part of it. This holistic form of education would focus on health, craft, self-sustainability where equilibrium would be established between the mind, body and soul. Through this education, teachers and students would produce and sell products in the market thus supporting the school and its financial needs. It would also impart value education to its recipients who would then become part of the larger social structure by becoming agents of change. The education was instilled in the belief that educated humans would then bring social change in society by endeavouring to make a social impact and to work for the well-being of others;

4) Asia and the Americas: Monthly Magazine, New York, November 1935;

5) CWMG, Vol. XXVI, p. 395-98;

6) Kishwar, M. (1985). Gandhi on women. Economic and Political Weekly, 1691-1702;

7) Patel, I. (1998). The contemporary women's movement and women's education in India. International Review of Education, 44 (2-3), 155-175;

8) Harijan, 8-9-1946, p. 306;

9) Young India, 21-3-1929, p. 23;

10) Harijan, 8-9-1946, p. 306.

Nabila Kazmi

Research Fellow, Gandhi Research Foundation

गाँधी की महत्ता का स्वरूप

सात दशक के बाद भी सारा विश्व एक व्यक्ति को याद कर रहा है। ऐसा क्या किया उस व्यक्ति ने कि लोग उनके विचारों के प्रति आशा भरी निगाहों से देखते हैं और उनमें से शाश्वत रास्ता खोजते हैं? क्योंकि उनकी वाणी और व्यवहार में किसी भी तरह का भेद नहीं था। उनका जीवन ही उनके संदेश को प्रस्तुत करता है। इसलिए आज भी सारा विश्व उन्हें महात्मा के रूप में जानता हैं।

महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि पर अमेरिका के पादरी जॉन हेन्स होम्स के द्वारा दी गई श्रद्धांजलि लेख के रूप में हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

कोई बीस वर्ष हुए होंगे, मैंने अमेरिका की जनता के आगे यह घोषित किया था कि ''गाँधीजी संसार में सबसे महान पुरुष हैं।'' उन दिनों मेरे देशवासी गाँधीजी के बारे में कुछ नहीं जानते थे। हमारे पाश्चात्य संसार में उनका नाम तब मुश्किल से पहुँच पाया होगा। किंतु उस समय से उनका नाम इतना अधिक प्रसिद्ध हो गया जितना कि किसी भी महापुरुष का हो सकता है। और अमेरिकावासी इस बात को जानते हैं कि मैंने गाँधीजी को जो सबसे महान कहा था, सो ठिक ही रहा था।

गाँधीजी की महत्ता इस युग में साधारणत: ऐसी किसी वस्तु के कारण नहीं है जिनकी कि साधारणतया महान प्रतिभा या महिमा के अंदर गणना हुआ करती है। न तो उनके पास बड़ी–बड़ी सेनाएँ हैं और न उन्होंने किसी देश को ही जीता है; न तो कोई उच्चपदासीन राजनीतिज्ञ ही हैं, जो राष्ट्रों के भाग्यविधाता कहे जा सकें। वह कोई दार्शनिक अथवा ऋषि भी नहीं हैं। उन्होंने न कोई बृहत् ग्रंथ लिखे हैं, न बड़े–बड़े काव्य। उनमें तो स्पष्ट और विशिष्ट व्यक्तित्व के वे तत्त्व ही नहीं हैं जो कि मनुष्य को, कम–से–कम बाह्यत:, एक प्रभावशाली नेता बनाते हैं। उनकी प्रतिभा तो आत्म–शक्ति के क्षेत्र में सन्निहित है। वहीं उसका होना उन्हें पसंद भी होगा। यह उनका 'आत्मबल' ही है जिसने उन्हें अनुपम प्रभाव और नेतृत्व के पद पर बिठा दिया है और ऐसी वस्तुओं को प्राप्त कराया है जो इतिहास के थोड़े–से बड़े–से–बड़े व्यक्तियों को छोड़कर सबकी पहुँच और गति से परे हैं।

भारत को अंत में जब स्वतंत्रता प्राप्त हो जाएगी तब उसका श्रेय जितना गाँधीजी को दिया जाएगा उतना किसी दूसरे भारतीय को नहीं मिलेगा। यह भी श्रेय गाँधीजी को ही मिलेगा कि उस स्वाधीनता के योग्य अपने देशवासियों को उन्होंने बना दिया है और ऐसा उन्होंने उनकी अपनी संस्कृति का पुनरुद्धार करके, आत्मगौरव और आत्मसम्मान की भावना को उनके अंदर जाग्रत करके, उनमें आत्मनियंत्रण का अनुशासन विकसित करके, अर्थात् उन्हें आध्यात्मिक तथा राजनैतिक दृष्टि से आजाद करके, किया है। इसके अलावा, उनका एक महान कार्य अस्पृश्यों के उद्धार का है – यह अकेला काम ही उनका इतना महान है कि जो मानव–जाति के उद्धार के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा। फिर गाँधीजी के जीवन की श्रेष्ठ वस्तु 'अहिंसात्मक प्रतिरोध' का सिद्धांत है, जिसको उन्होंने विश्व में स्वतंत्रता, न्याय और शांति प्राप्त करने के लिए एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक कला में परिणत कर दिया है। दूसरे मनुष्यों ने जिस वस्तु को एक व्यक्तिगत अनुशासन के रूप में सिखलाया है, गाँधीजी ने उसे विश्व के उद्धार के लिए एक सामाजिक कार्यक्रम के रूप में परिणत कर दिया है।

गाँधीजी अतीत युगों के तमाम महापुरुषों में भी महान हैं। राष्ट्रीय नेता के रूप में वह अल्फ्रेड, वालेस, वाशिंगटन, कोसियस्को, लफाइती की कोटि में आते हैं। गुलामों के त्राता के रूप में वह क्लार्कसन, विल्बरफोर्स, गैरिजन, लिंकन आदि की भाँति महान हैं। ईसाई धर्मग्रंथों में जिसे 'अप्रतिरोध' और इससे भी सुंदर शब्द 'अमोघ प्रेम' कहा है, उसकी शिक्षा देनेवाले के रूप में वह संत फ्रांसिस, थोरो और टॉल्सटाय की श्रेणी में आते हैं। युग–युगांतरों के महान धार्मिक पैगंबरों के रूप में वह लाओजे, बुद्ध, जरथुश्त और ईसा के समकक्ष हैं। सर्वश्रेष्ठ रूप में वह मानव हैं,

जिसके विषय में मैंने री–थिंकिंग रिलीजन नामक अपनी हाल की पुस्तक में लिखा है –

''वह विनम्र हैं, मृदुल हैं और बड़े दयालु हैं। उनकी विनोदशीलता अदम्य है। उनके व्यवहार की सरलता मोहक है, उनकी संकल्प–शक्ति को

जॉन हेन्स होम्स

कोई दबा नहीं सकता, उनका साहस मानो लोहा है। यद्यपि उनके तौर–तरीके शांत और मृदुल होते हैं, फिर भी उनकी सच्चाई स्फटिक मणि के समान पारदर्शक है, सत्य के प्रति उनकी निष्ठा अनुपम है, खोने के लिए कुछ न होने के कारण उनकी स्थिति ऐसी है कि उन पर आक्रमण नहीं किया जा सकता। हरेक वस्तु का खुद जिसने उत्सर्ग कर दिया है वह दूसरों से किसी भी वस्तु को त्यागने के लिए कह सकता है। उसके जीवन से सांसारिक विचार, सांसारिक महत्त्वकांक्षाएँ और चिंताएँ कभी की विलुप्त हो चुकी हैं। उस पर तो आत्मा का ही, जो सत्ता और अहिंसा के रूप में व्यक्त है, पूर्ण अधिकार है। गाँधीजी कहते हैं, 'मेरा धर्म–सिद्धांत ईश्वर की सेवा और इसलिए मानव–जाति की सेवा है... और सेवा का अर्थ है शुद्ध प्रेम।'''

– पादरी जॉन हेन्स होम्स,
न्यूयॉर्क,
'गाँधी अभिनंदन–ग्रंथ' से साभार

गाँधी तीर्थ से...

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का लक्ष्य, संकल्प व भावना को दिशा निर्देश देने के कार्य में न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी की भूमिका महत्त्वपूर्ण बनी है। वे आज हमारे बीच नहीं है, किंतु उनके विचार गाँधी विचारधारा की धरोहर को प्रस्तुत करते हैं। हम गर्व महसूस कर रहे हैं कि आप गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के पहले अध्यक्ष थे। फाउण्डेशन की संकल्पना के प्रति आपके विचार स्पष्ट रूप में उभरकर सामने आते हैं। श्रद्धेय भवरलालजी जैन द्वारा मानवता को अर्पित 'गाँधी तीर्थ' का निर्माण किया गया उस दौरान आपके द्वारा लिखी गई भूमिका हमारे पाठकों के साथ साझा कर रहे हैं।

–संपादक

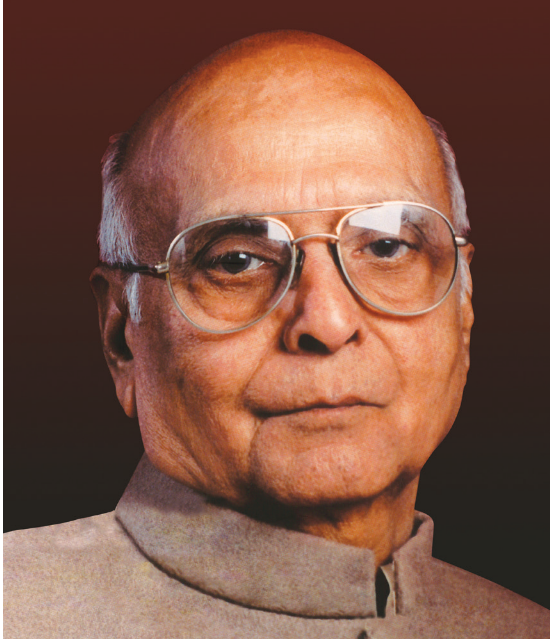

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

हमारी भूमिका

महात्मा गाँधी को मैंने सर्वप्रथम १९३६ में सेवाग्राम में देखा। उस समय वहाँ कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक चल रही थी। सारे नेता शरीरश्रम में लगे हुए थे। जमनालाल बजाज चक्की पर कुछ पीस रहे थे। उस समय मुझे लगा कि, गाँधीजी का सिर तो नहीं फिर गया है। क्योंकि उन्होंने ऐसे बड़े–बड़े नेताओं को इतने छोटे हलके काम करने को कहा। इसलिए मैंने आश्रम के संचालक से पूछ लिया कि, ऐसे काम तो हमारे घर में नौकरानी करती है, परंतु यहाँ तो आप विश्वप्रसिद्ध नेताओं और कार्यकर्ताओं से यह काम करवा रहे हैं; ऐसा करना क्या शोभनीय है? उस दिन रसोई में बहुत बड़े तथा श्रेष्ठ नेता की ड्यूटी लगी थी। उन्हें देखकर ही मैंने यह प्रश्न किया था। संचालक ने मुझसे पूँछा कि, 'सब्जी अच्छी नही लगती क्या?' लगती है। तब उन्होंने फिर पूछा, 'जिस चीज को खाने में शर्म नहीं आती, उसे छीलने, साफ करने, खाने योग्य बनाने में शर्म क्यों आती है?' उस दिन मुझे उत्पादक शरीरश्रम की प्रतिष्ठा का, महत्ता का नया सूत्र मिला। जिस देश तथा समाज में शरीर श्रम की प्रतिष्ठा नहीं होती, वहाँ केवल बेश्रम यानी बेशर्मी की प्रतिष्ठा रहती है। गाँधीजी ने चरखे को क्रांति का प्रतीक माना था। हम लोगों ने गाँधीजी के साथ वर्धा की भंगी वाली बस्ती में संडास सफाई से लेकर सारे काम किए। क्योंकि उनकी दृष्टि में झाडू क्रांति का प्रतीक था। ब्राह्मण के हाथ में झाडू और वाल्मीकि के हाथ में भगवद्गीता आ जाए, तो जाति–पाति मिटेगी और जन्माधिष्ठित प्रतिष्ठा समाप्त हो जाएगी। इसी कारण चरखा आर्थिक विषमता खत्म करने का प्रतीक था और झाडू सामाजिक विषमता दूर करने का प्रतीक था। इन सबका मन पर अनजाने में ही इतना प्रभाव व असर हुआ कि, हमने किसी की जाति नहीं पूछी, किसी के वेतन के बारे में नहीं पूछा। क्योंकि इन सब बातों पर मनुष्य का मूल्य अवलंबित नहीं है। 'काते सो पहने और पहने सो काते,' इस एक वाक्य में क्रांति का मूल्य समाहित था। व्यक्तिगत पूजा या उपासना स्वतः तक सीमित रहती है, सामूहिक प्रार्थना पारस्परिक भलाई के लिए की जाती है। इसी स्नेह–सहयोग में से मानवनिष्ठ भारतीयता पैदा होगी, यह ज्ञात हुआ।

गाँधी तीर्थ निर्माण के दौरान मुआइना करते हुए डॉ. दोशी, भवरलालजी जैन तथा न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

मेरा सद्भाग्य यह था कि, गाँधीजी का हाथ अपने कंधे पर रखकर मैं उनके साथ घूमने जा सका। जिस दिन उनकी हत्या हुई, उस दिन हम जोर–जोर से रोने लगे थे। यह दुख तो मानो पिता की मृत्यु से भी तीव्र था, क्योंकि वह तो राष्ट्रपिता की मृत्यु थी। मेरा जीवन ही मेरा संदेश है, यह गाँधीजी ने कहा था। उसका अर्थ न समझने के कारण कुछ लोगों ने उनके जीवन की गलत नकल की और संदेश भूल गए। जिन्होंने संदेश को समझने का प्रयत्न किया, वे उनके जीवन को भूल गए। जिससे अनेक गफलतें पैदा हो गईं।

मैं पूरे भारत में बहुधा युवकों और विद्यार्थियों के बीच घूमता हूँ, इन युवकों में गाँधी को मूलतः समझने की आकांक्षा, इच्छा और प्यास है। अणुशास्त्र बढाने की होड़ आज भी जारी है। सभी यह दावा करते हैं कि, यह शक्ति हम शांति और संरक्षण स्थापित करने के लिए बढ़ा रहे हैं। अमेरिका का अर्थशास्त्र शस्त्र निर्माण पर ही अवलम्बित है। आचार्य विनोबा ने इसका वर्णन अपनी विशिष्ट शैली में किया है। वे इस भावना को उष्णशांति कहते हैं। वे आगे कहते हैं कि, आज विचारों का, भाषणों का ब्राडकास्ट होता है। परंतु डीपकास्ट यानी उसमें गहराई

नहीं होती है। वह सब ऊपरी झलक है। युद्ध के समय शस्त्रों का उत्पादन होता है। सेना खड़ी की जाती है। जप शांति का और काम शस्त्र उत्पादन बढाने का। ऐसी दोहरी नीति है।

विज्ञान ने मनुष्य को एक-दूसरे का पड़ोसी बना दिया है, परंतु विज्ञान उन्हें मित्र या साथी नहीं बना सकता। यह काम संस्कृति करती है। अतः शांति की संस्कृति की प्रतिस्थापना करनी है, तो गाँधी विचारों के अलावा और कोई विकल्प व उपाय नहीं है। अहिंसा क्रांतिकारी मूल्य है। जैसे वह सामाजिक और क्रांतिकारी मूल्य है, वैसे वह सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य भी है। अतः उनमें वीरवृत्ति द्वारा प्रतिकार व मानवोचित पुरुषार्थ का सर्वाधिक महत्त्व है। किन्तु समाज में असमानता, अशांति व सामाजिक अव्यवस्था के रहते शांति-संस्कृति की स्थापना सम्भव नहीं है।

किसी भी परिस्थिति में कानून को हाथ में न लिया जाए, यह जो स्वर्ण नियम है, उसका अपवाद सम्भव नहीं है। यह विचार है, उस महात्मा का, जिसने पराधीनता के विरुद्ध आंदोलन में सविनय कानून भंग का ही आंदोलन चलाया था। गाँधीजी का आंदोलन ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध था। उन्हें जो कायदे-कानून अनैतिक और पराधीनता बढाने वाले प्रतीत हुए, उनके विरुद्ध उन्होंने सविनय कानून भंग का आंदोलन चलाया। वह अविनय कानून भंग का आंदोलन नहीं था। वह पूरी तरह शांतिपूर्ण और अहिंसक था।

आज समाज में किसी की हत्या कर देना साधारण सी बात है। मूल प्रश्न यह है कि, हम कानून का राज्य चाहते हैं या आतंक और गुंडागिरी का राज्य चाहते हैं? किसी भी स्थिति में खून या हत्या का उदात्तीकरण गलत ही नहीं, निन्दनीय भी है। यदि हमें कानून का राज्य अपेक्षित है, मारा गया व्यक्ति राक्षस है, इस प्रकार उसका खून करने का अधिकार मनमाने कायदे को नहीं है। वह राक्षस है या नहीं है, यह भी कानून के अनुसार तय करने का अधिकार न्यायालय का है और राक्षसी कृत्य के लिए न्यायालय ही सजा दे सकता है।

आज दुर्भाग्य से हम दोहरा जीवन जी रहे हैं। चारित्र्य के हमने दो भाग कर दिये हैं - एक वैयक्तिक जीवन और दूसरा सार्वजनिक जीवन। जब कोई सार्वजनिक जीवन के बारे में या सार्वजनिक चरित्र के बारे में आक्षेप करता हैं। तब वह कह देता हैं कि, उसका वैयक्तिक चारित्र्य देखिये। अर्थात् नहीं देखिये, जो सुविधाजनक है, यही उसका तात्पर्य है। क्योंकि चारित्र्य और साधन-शुचिता संदर्भरहित हो जाते हैं। हम यह भूल ही जाते हैं कि, संकल्प, सिद्धांत, ध्येय और साधन एकरूप और समरस नहीं होंगे, तो ध्येय ही कलुषित, विकृत हो जाता है। साध्य के अनुरूप साधन और जीवन नहीं रहेगा, तो उसका जनमानस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और यही समझा जाएगा कि, सब ढोंग या पाखण्ड है। अतः साधन और साध्य में समन्वय अत्यंत आवश्यक है, समग्रता भी आवश्यक है। यही सिद्धांत और व्यवहार का समन्वय है। चित्त शुद्धि और साधन शुचिता उसका अधिष्ठान है। इसी के लिए गाँधीजी ने ग्यारह व्रत बताये हैं। व्रत मनुष्य के मोह-माया से मुक्त होने में सहायक होते हैं। स्वतंत्रता तथा ध्येय सिद्धि के लिए व्रत महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। इनसे जीवन में शुचिता आती है। गाँधीजी की प्रार्थना में वे नियमित रूप से बोले जाते थे।

नये युग में लोकतंत्र प्रणाली हमारा ध्येय है और चुनाव साधन है। इसलिए आग्रह रहता है कि, उम्मीदवार चरित्रवान हो। हमें लगता है और चाहते हैं कि, हमारा जनप्रतिनिधि चारित्र्यशील हो। इसलिए अब उम्मीदवार को अपने शपथ-पत्र में अपने चारित्र्य, संपत्ति आदि का ब्योरा देने का प्रावधान जोड़ा गया है। क्या वह फौजदारी अपराध में शामिल था या है, यह जानकारी देनी होती है। अपनी पत्नी की, बच्चों की सम्पूर्ण चल-अचल संपत्ति घोषित करनी होती है। कर्ज आदि का ब्योरा आदि देना भी जरूरी है। शैक्षणिक योग्यता आदि का उल्लेख आदि नियम जोड़े गए हैं। इन बंधनों के बिना जन प्रतिनिधित्व का ध्येय सिद्ध नहीं हो सकता। इसका आशय यह है कि, लोकतंत्र का ध्येय चुनाव पद्धति से दूषित या कलुषित न हो। अतः उम्मीदवार के लिए जैसी आचार संहिता आवश्यक है, वैसे ही लोकतंत्र के साध्य तक पहुँचने के लिए साधन भी शुद्ध, पवित्र होने चाहिए। अवैध और दूषित साधनों से लोकतंत्र की पवित्रता, स्वच्छता की हिफाजत या रक्षा नहीं की जा सकती। इसी तरह नागरिकों को भी कुछ परहेज करना होगा। चुनाव प्रक्रिया शुद्ध-साफ रहे, यह वर्तमान युग की आवश्यकता है। मतदान का अधिकार नागरिक का सतीत्व है। मत दक्षिणा नहीं है, गोग्रास नहीं है। भिक्षा नहीं है और नैवेद्य भी नहीं है। मतदान मेहरबानी के कारण नहीं दिया जाता है। मत बेचना या खरीदना, धर्म, जाति या पंथ के नाम पर हडपना भी महापाप है। इसलिए मतदान के अंतिम क्षण तक निर्णय करने की स्वतंत्रता किसी तरह के आश्वासन से खोना नहीं चाहिए। मतों को नीलाम करके लोकतंत्र को बाजारू बनाने का पाप न किया जाए। धन के लोभ से, लाठी के भय से, सत्ता के आतंक से मतदान न किया जाए। ऐसा करना लोकद्रोह या आत्मवंचना है। सम्प्रदाय, जात-पात, अस्पृश्यता मानने वालों को मत न दिया जाए। व्यसनी, दुराचारी को अथवा सत्ता द्वारा जिसने नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का हनन किया है, उसे मत देना लोकतंत्र की हत्या है। उम्मीदवार मतदाताओं से आश्वासन न चाहें, भय-प्रलोभन न दिखायें। शुचिता के ये मूल्य सिर्फ राजनीतिक चुनावों पर ही लागू नहीं होते। बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्रों के साथ-साथ चुनाव के सभी क्षेत्रों पर पूरे अर्थों में लागू होने चाहिए। दादा धर्माधिकारी के शब्दों में कहा जाए तो, ''गाँधी की विचार और आचार प्रणाली अत्यंत उदात्त, शास्त्रशुद्ध और वस्तुनिष्ठ है।

दुनिया में सब जगह जातिवाद और संप्रदायवाद का बोलाबाला हो, चारों तरफ तलवार और शस्त्रास्त्रों की भाषा सुनाई दे रही हो मानव, मानव का वैरी बनने में ही जीवन को सार्थक मान रहा हो, ऐसे में जो महामानव उच्च स्वर में, मुझे मेरी अहिंसा की शर्म महसूस नहीं होती-ऐसा नम्र आत्मप्रत्यय के साथ कहता था। मानव विद्रोह के विषैले झंझावात में जिसकी मानव निष्ठा बुझने के बदले और अधिक प्रज्ज्वलित होती थी। उसका चरित्र और चारित्र्य, उसका तत्त्व ज्ञान और नीति सागर के समान व्यापक है, गंगा की तरह पवित्र है और गौरीशंकर सदृश उज्ज्वल और उत्तुंग है। महाकवि कालिदास का देवात्मा हिमालय पृथ्वी का मापदंड है। महामानव आत्मा गाँधी अखिल मानवता का मापदंड है। उसकी वृत्ति से, उक्ति से और कृति से मानवता की लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई और गहराई मापी जा सकती है। ऐसे महामानव आत्मा को, उसकी अकुंठित निष्ठा को, उसके असीम पौरुष को, उसके अनंत वीर्य और अपराजेय पराक्रम को शतशः प्रणाम। यही मानव का भव्य, पुण्यकारी और कल्याणमय विश्वदर्शन है'' और यही गाँधी तीर्थ और गाँधी रिसर्च फाऊंडेशन की भूमिका है। यह संशोधन केन्द्र और गाँधी तीर्थ, गाँधी विचारों और उनके आचारों का प्रक्षेपण केन्द्र और श्वसन केन्द्र बने यही हमारी आकांक्षा है।

फाउण्डेशन की गतिविधियां

इंटरनेशनल विंटर स्कूल २०१९-२०

गाँधीयन नॉनवायलन्स एंड पीस

बा-बापू १५०वीं जयंती के अवसर पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने ६ से ११ जनवरी, २०२० के बीच गाँधीयन नॉनवायलन्स एंड पीस पर एक अंतरराष्ट्रीय विंटर स्कूल का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम में भारत सहित अन्य सात देशों के १७ प्रतिभागियों ने छह दिवसीय शिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। पहले तीन दिन सत्य, अहिंसा, शांति और संघर्ष निवारण जैसे मुख्य सिद्धांतों की समझ प्राप्त करने का प्रयास किया गया। और अगले तीन दिनों के दौरान समाज, राष्ट्र और वैश्विक जीवन के संदर्भ में इन मूल सिद्धांतों का प्रयोग कैसे किया जाए इस संदर्भ में प्रयास किया गया।

इस कार्यक्रम में दिन का आरंभ दो दिन योग और आसन से तथा दो दिन पीस वॉक और एक दिन पक्षी निरीक्षण के द्वारा किया गया। बाद में सभी सहभागी फाउण्डेशन की सामूहिक प्रार्थना में जुड़ते थे। प्रार्थना के दौरान कुछ सहभागियों ने अपने जीवन में अनुभवीत अहिंसा एवं शांती की गाथा को प्रस्तुत किया। उनमें न्यूजीलैंड से आए हुए सिडनी रिडी नामक व्यक्ति ने न्यूजीलैंड स्थित परिहका नामक माओरी गाँव के बारे में बात की थी। सन् १८८० में आइडर तईटी ओटी ओंगोमाई के नेतृत्व में वहाँ के लोगों ने हमलावर ब्रिटिश सेना का विरोध किया था। भारत के नविन वासुदेवन ने बर्निंग मोंक की बात रखी जिन्होंने शांति और न्याय के लिए सर्वोच्च आत्म-बलिदान के द्वारा सत्याग्रह की भावना को प्रेरित किया। यमन से आई हुई फिरदौस अली अब्दुल्ला ने अपने प्रदेश में चल रहे युद्ध में शांतिपूर्ण जीवन यापन के लिए संघर्षपूर्ण गाथा की बात को प्रस्तुत किया। हार्वर्ड विश्वविद्यालय की स्कॉलर डॉ. मारिस स्टुअर्ट ने कुछ भेदभावपूर्ण कानून के खिलाफ माताओं के अधिकारों के लिए लोगों के संघर्ष की बात की। डेनियल सांगा ने नक्सल प्रभावित गाँवों में रहते युवाओं की चुनौतियों के बारे में बताया।

एक सप्ताह के दौरान आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ गाँधिजन प्रो. एम. पी. मथाई, गुजरात विद्यापीठ के पूर्व कुलपति तथा फाउण्डेशन के संचालक डॉ. सुदर्शन आयंगार, एसपीजेआईएमआर मुंबई के प्रो. जगदीश रत्नानी, फाउण्डेशन के शोध विभाग की डीन प्रो.

विभिन्न देश-प्रदेश से विंटर स्कूल २०१९-२० में पधारे सहभागी

विंटर स्कूल की कुछ झलकियां

विभिन्न चर्चा-सत्र, संवाद व खेल के माध्यम से जीवन को उनकी समग्रता में देखने का अद्भुत अनुभव मतलब विंटर स्कूल।

गीता धरमपाल थे। फाउण्डेशन के शिक्षा विभाग के डीन डॉ. जॉन चेल्लदूरै ने इस कार्यक्रम के समन्वयक के रूप में अपनी भूमिका अदा की। प्रमुख सत्रों का आयोजन गाँधी तीर्थ पर तथा श्रद्धेय भवरलाल जैन की स्मृति स्थल श्रद्धाधाम और नक्षत्र गार्डन में आयोजित किए थे।

इस कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में फाउण्डेशन के संचालक दलीचंद ओसवाल तथा अंबिका जैन उपस्थित थे। उपस्थित सहभागियों ने अपने अभिमत व्यक्त किए। न्यूजीलैंड से पधारी मारिस ने कहा कि वे इस कार्यक्रम को न्यूजीलैंड में अपने सहयोगियों के लिए आयोजित करना चाहेगी। चेन्नई से पधारी गेडजी शिनोला ने कहा कि विंटर स्कूल ने उनके सामाजिक दृष्टिकोण को पूरी तरह से बदल दिया है। प्रशिक्षक नवीन वासुदेवन ने कहा कि स्कूल ने सत्य और अहिंसा के बीच संबंध को स्पष्ट कर दिया है। केन्या से आए छात्र जोशुआ बोइट ने कहा की भारत में बसे अपने अफ्रीकी छात्र समूह के लिए वे इस कार्यक्रम का आयोजन करना चाहेंगे। सभी सहभागियों ने इस कार्यक्रम के माध्यम से अपने जीवन में वैचारिक परिवर्तन की सीमाओं में अलौकिक बदलाव को महसूस किया। सभी सहभागियों के मुताबिक इस कार्यक्रम ने सफलता के मानांकन को पार कर दिया।

◆◆◆

विंटर स्कूल के अनुभव की गाथा को प्रस्तुत करते न्यूजीलैंड से आए सिडनी रिडी।

गाँधी १५० राष्ट्रीय बैठक

राष्ट्रीय बैठक में पधारे हुए विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा वरिष्ठ गाँधीजन

महात्मा गाँधी और कस्तूरबा की १५०वीं जयंती के अवसर पर देश की प्रमुख गाँधी विचार आधारित संस्थाओं की एक बैठक मदुराई स्थित धान पिपल्स अकादमी में आयोजित हुई। देश के विभिन्न भागों से करीब ४५ लोग इस बैठक में उपस्थित थे। ७ और ८ जनवरी २०२० के दौरान दो दिवसीय इस बैठक में पिछले एक साल के दौरान क्या कार्यक्रम किए गए और आने वाले समय में क्या कार्यक्रम किया जाना चाहिए, इस विषय पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रस्तुति की गई। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन से इस बैठक के लिए अश्विन झाला उपस्थित थे, अश्विन झाला ने पिछले एक साल के दौरान फाउण्डेशन द्वारा की गई गतिविधियों को प्रस्तुत किया तथा आने वाले समय में किए जाने वाले कार्यों का जिक्र करते हुए गाँधी विचार संस्कार परीक्षा को अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर कैसे आगे बढ़ाया जाए इस विषय पर अपनी बात रखी। इस बैठक में वर्तमान स्थिति, प्रशासन का रवैया तथा गाँधी विचार आधारित कार्य की रूपरेखा पर विचार–विमर्श करते हुए उपस्थित प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किए। इस बैठक का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय के अन्नामलाई, गाँधी शांति प्रतिष्ठान के कुमार प्रशांत तथा गाँधी स्मृति के रामचंद्र राही ने किया। इस बैठक का समन्वय कार्य गाँधी संग्रहालय मदुराई के वरिष्ठ गाँधीजन नटराजन जी तथा उनके समूह द्वारा किया गया।

यॉक विश्वविद्यालय के प्रो. टेलर गाँधी तीर्थ पर

इंग्लैंड स्थित यॉक विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रो. टेलर फिलहाल भारत की मुलाकात पर थे। प्रो. टेलर ने एक विशिष्ट उद्देश्य के आधार पर यह दौरा आयोजित किया। करीब नौ दशक पूर्वे गाँधीजी ने ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह किया था। इस सत्याग्रह ने अपने आप में कई क्रांति की है। आने वाले अप्रैल २०२० में इंग्लैंड में नमक विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित होने जा रहा है। इस कार्यक्रम में प्रो. टेलर गाँधी और नमक सत्याग्रह विषयक एक डिजिटल प्रदर्शन प्रस्तुत करने वाले हैं। इस सिलसिले में प्रो. टेलर गाँधी तीर्थ पधारे थे। यह प्रदर्शन नमक सत्याग्रह के साथ भारत में हो रही वर्तमान चर्चा जैसे कि खुराक की कमी आदि मुद्दों का भी समावेश करने वाले हैं।

नमक सत्याग्रह के संदर्भ में विस्तृत अध्ययन तथा जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से गाँधी तीर्थ पर पधारे प्रो. टेलर ने गाँधी तीर्थ संग्रहालय, अभिलेखागार की मुलाकात की। इस दौरान फाउण्डेशन की टीम डॉ. सुदर्शन आयंगार, अंबिका जैन, उदय महाजन, प्रो. गीता धरमपाल तथा अश्विन झाला के साथ विस्तृत विचार–विमर्श किया गया। प्रो. टेलर को गाँधी तीर्थ से नमक सत्याग्रह के संदर्भ में कई रोचक जानकारी के साथ महत्त्वपूर्ण सामग्री भी प्राप्त हुई।

प्रो. टेलर के साथ गाँधी तीर्थ के सदस्यों का विचार–विमर्श

स्नातकोत्तर डिप्लोमा के छात्रों का अभ्यास दौरा

नर्मदा नदी के तट पर स्थित डनेल गाँव की ओर आगे बढ़ते छात्रवृंद

ग्रामीण जीवन का आधार कृषि को समझते हुए कार्यकर्ता

फाउण्डेशन द्वारा संचालित 'पीजी डिप्लोमा इन सस्टैनेबल रुरल रिकंस्ट्रक्शन' के छात्रों की द्वितीय अभ्यास यात्रा ९ से २१ दिसम्बर २०१९ के दौरान आयोजित हुई। इस अभ्यास यात्रा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को विभिन्न संस्थानों की कार्य प्रणाली तथा संरचना को समझना तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रयासरत कार्यकर्ताओं को रूबरू होकर उनके प्रयासों को समझना था। दो गुट में आयोजित इस अभ्यास यात्रा में अश्विन झाला के मार्गदर्शन में आठ छात्रों का गुट दक्षिण गुजरात में प्रयासरत कर्मशील व्यक्ति खोबा गाँव में कार्यरत लोकमंगलम के नीलमभाई, मांगरोल गाँव में कार्यरत वरिष्ठ गाँधीजन महेन्द्रभाई भट्ट, साकवा गाँव में जैविक खेती पर आधारित जीवन व्यतीत करने वाले धीरेनभाई, तथा अन्य संस्थाओं की मुलाकात के लिए गया था। दूसरा समूह डॉ. जॉन चेल्लदूरै के मार्गदर्शन में आठ छात्रों दूसरा समूह उत्तर गुजरात के ग्रामीण भाग में कार्यरत ग्राम–शिल्पी जिसमें पेढ़ामली गाँव में कार्यरत जलदीपभाई, मेघरज तहसील के पास जर्डा गाँव में कार्यरत सुरेशभाई एवं गूजरात विद्यापीठ की मुलाकात कर ग्राम स्वराज्य आधारित रचनात्मक कार्य के प्रति एक बृहत् अनुभव प्राप्त किया। इन दोनों गुटों की यह मुलाकात अत्यंत फलदायी रही।

छात्रों का यह दोनों समूह १९ दिसम्बर के दिन सरदार सरोवर पर एकत्रित हुआ और नाव के जरिए नंदूरबार जिले में नर्मदा नदी के किनारे स्थित डनेल गाँव की जीवनशाला की मुलाकात की इस मुलाकात के दौरान वहाँ के छात्रों के साथ विभिन्न कला को प्रस्तुत करने का अवसर भी जुटा पाए।

व्यक्तिगत रूप से सामाजिक कार्यकर्ता निर्माण करने एवं सर्वोदय विचारधारा के आधार पर स्वावलंबी गाँव की दिशा में आगे बढ़ने में यह शैक्षिक दौरा निश्चित ही पथदर्शक बनेगा।

◆◆◆

चरित्र निर्माण की निरंतर प्रक्रिया में मग्न ग्रामशिल्पी जलदीपभाई, पेढामली गाँव, गुजरात। जलदीपभाई के अनुभव को समझते फाउण्डेशन के युवा छात्र

कीर्तन के माध्यम से जनसमुदाय में जागरूकता पैदा करने का फाउण्डेशन का प्रयास

कीर्तन के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का सिंचन

अध्यात्म विषय समाज मन को सहजता से भाव विभोर करता है, भक्ति मार्ग के कई क्रियाकलाप समाज को कई तरह के मूल्य प्रदान करता है। बात जब महाराष्ट्र के गाँवों की आती है तो निश्चित रूप से संत परंपरा के दर्शन होते हैं। इसमें कीर्तन परंपरा एक अद्भुत प्रभाव डालने वाली कड़ी बनी हुई है। फाउण्डेशन ने अपनी गतिविधियों को साकार करने के लिए कई साधन को स्वीकृत किए हैं। उनमें सामाजिक प्रबोधन के लिए लोक मानस को समझकर उनके हृदय तक पहुँचने में कीर्तन एक प्रभावी माध्यम बना हुआ है। स्वच्छता, व्यसन मुक्ति, शिक्षा, पानी और अन्य संसाधनों के प्रति जागरूकता निर्माण करने के लिए कीर्तन के माध्यम से अन्य सामाजिक पहलू के प्रति सतर्कता निर्माण की जा रही है।

ऐसा ही एक सामाजिक कीर्तन ७ जनवरी २०२० के दिन जलगाँव के कुर्हाडदा गाँव में आयोजित किया गया। कीर्तनकार ऋषिकेश महाराज जोशी ने अपनी अमृतवाणी से लोगों को मंत्र मुग्ध किया। कुर्हाडदा गाँव के सभी ग्रामस्थों ने इस कीर्तन में उपस्थित रहकर न केवल आनंद लिया बल्कि सामाजिक मूल्य को आत्मसात करने की दिशा में अपनी तैयारी भी दर्शाई। ऋषिकेश महाराज ने अंधश्रद्धा, पर्यावरण संरक्षण, पशुपालन, महिलाओं का सम्मान, मूल्य शिक्षा, स्वच्छता जैसे आदि विषयों पर विचार व्यक्त किया। दो घंटे तक चले इस कीर्तन में महिलाओं ने बड़ी मात्रा में उपस्थिति दर्शाई तथा गाँव के मान्यवर दादा पाटील एवं अन्य युवा वर्ग ने इस कार्यक्रम के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया। फाउण्डेशन के सहकारी सुधीर पाटील, चेतन, प्रशांत, मयूर, विक्रम तथा अन्य लोगों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान प्रदान किया।

◆◆◆

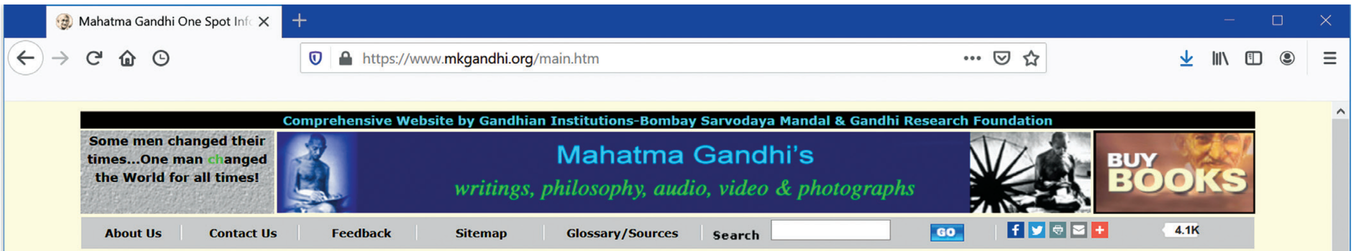

दो सौ से अधिक देश के लोग www.mkgandhi.org की मुलाकात करते हैं

गाँधीजी के जीवन विषयक कई अधिकृत जानकारी का एक स्रोत है www.mkgandhi.org इस वेबसाईट पर दिन में कई लोग गाँधी विचार आधारित साहित्य को खोजते हैं और प्राप्त करते हैं। ऐसा कहे तो गलत नहीं है कि महात्मा गाँधी से संबंधित साहित्य को फैलाने में यह वेबसाइट अग्र स्थान पर है। विश्व के २०० से भी अधिक देशों के छह हजार से अधिक लोग हर रोज इस संकेत स्थान की मुलाकात करते हैं। दो दशकों से कार्यान्वित इस वेबसाइट को करीब दो करोड़ से भी अधिक लोग मुलाकात कर चुके हैं। मुंबई सर्वोदय मंडल तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा इस वेबसाइट को संभाला जा रहा है। हमें कई पाठकों, मुलाकातियों तथा विद्वानों के अभिमत प्राप्त होते हैं उनमें से एक यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

I wanted to personally thank you for your efforts to share all these good quotes of honourable Gandhiji and his deeds, in our chat groups every single day with patience and care. I do want you to know that I am sharing those whatever you send me (the quotes of Gandhiji) every single day with my English teacher candidate students in my class via our WhatsApp group and also share about you and my other friends in your good country. Every single day I am teaching them the facts about Bapu, his admirable character and how he changed the hearts of people across the planet. May peace and God be with you.

- Ugur Erülker, Turkey

https://www.mkgandhi.org/onlinequiz.htm

पाठकों के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत*

– संपादक

I am deeply obliged for the January 2020 issue of Khoj Gandhiji Ki. It is very engaging and inspiring. It has revived my deeply respectful memories of Dada Dharmadhikariji.

It has also helped me recollect my precious memories of visits to Jalgaon and the experiences I had of meeting with respected Dr. Bhavarlalji and exchanging thoughts with him. I am also in contact with my long time friend Prof. Mark Lindley, whose book Gandhi on Health has been just published by GRF.

I congratulate you and other dear colleagues at GRF for the content of the journal. Thanking you with my deep regards.

YP Anand,
Former Director, National Gandhi Museum, New Delhi

....

We are receiving your magazine regularly, and come to know of the GRF's different activities through it. It is very informative as well as motivating. Really you people are doing marvellous work for the society, especially by associating young generation with the life, work and ideologies of Gandhiji. I have no words of appreciation for your these dedicated works.

Nirmal Dutt,
Bharatiya Khadi Gramodyog Sangh, Panipat

संग्रहालय के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' संग्रहालय देखने आए हुए अतिथियों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ अभिमत*

– संपादक

महात्मा गाँधी नाम की जो रोशनी इस दुनिया में चमकी है। उसे यह दुनियाँ सदियों तक देखती रहेगी। यह रोशनी सत्य का प्रतिक है।

इस म्यूजियम से हम बहूत प्रभावित हुए हैं। धन्यवाद।

***संजय संभ्ये**, वाघोली, पुना*

....

गाँधीजी के विचारों को, उनके कामों को प्रचार करने का एक बहुत ही खुबसूरत प्रयास है। आज की २१वीं सदी में यह बहुत ही अच्छा उपक्रम है। नई पीढी को गाँधीजी के विचार को समझने में इसका बहुत बड़ा योगदान होगा। धन्यवाद।

***यश संजय अग्रवाल**, दोंडाईचा, धुले*

....

That was the most memorable moment I ever had, in those rooms of the Museum. I would like to revisit it again.

***Ronit D. Dhandare**, Tuljapur, Dahegaon*

....

Amazing! The Museum gave us a realistic feel of M. K. Gandhi. All the sculptures & Statues were fabulous.

***Shubham G. Wagh,** Ronak, Maharashtra*

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

सुनिल देशमुख, अध्यक्ष–महाराष्ट्र मंडल, यु.एस.ए. ०३.०१.२०२०

प्रो. टेलर, यॉक विश्वविद्यालय, इंग्लैंड ०५.०१.२०२०

छात्र समूह, आर्किटेक्चर कॉलेज, नाशिक ११.०१.२०२०

माशिल गार्सिया, इटली तथा एन्ड्रेड काराझो, सेटिस विश्वविद्यालय, मेक्सिको १८.०१.२०२०

विद्यार्थी समूह – कॉलेज ऑफ इंजिनिअरिंग, अकोला २४.०१.२०२०

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

चित्र श्रृंखला - ०१

महात्मा को नमन

महात्मा गाँधी के अंतिम समय की रोचक जानकारी को प्रस्तुत करती 'महात्मा को नमन' चित्र श्रृंखला

महात्मा गाँधी का पार्थिव शरीर बिड़ला हाऊस में, दिल्ली, जनवरी ३०, १९४८

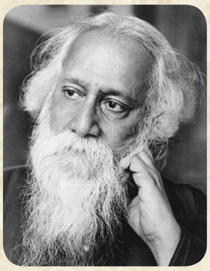

''महात्मा गाँधी आए और भारत के लाखों वंचित परिवारों के साथ खड़े हो गए। ...जिन्होंने अपनी पूरी ताकत अपने लोगों के उत्थान और बेहतरी में लगा दी।''

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

क्या आप जानते है?

गाँधीजी ने अपने सचिव प्यारेलाल को कहा था कि, ''जब मेरी मृत्यु होगी उस वक्त में जहाँ भी हूँ वहीं पर मेरा अग्निकर्म किया जाए।'' इसलिए बापू की मृत्यु के बाद दिल्ली में ही यमुना नदी के तट पर उनका अग्निकर्म किया गया।

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:
Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ फरवरी, २०२०